1

कहाँ, कब और कैसे

कहाँ, कब और कैसे?

बिहार दिवस के अवसर पर राखी और आयुष पटना के गाँधी मैदान में आए। मैदान में मेले जैसा माहौल था। विभिन्न पण्डालों में अलग–अलग गतिविधियाँ चल रही थीं। घूमते–घूमते वे लोग ऐसे पण्डाल में पहुँचे जहाँ क्विज प्रतियोगिता हो रही थी। एक प्रश्न था–पटना का प्राचीन नाम क्या था। राखी तेजी से मंच की ओर बढ़ी, माइक अपने हाथ में लिया और जोर से बोली–पाटलिपुत्र। तालियों की आवाज के साथ राखी को पुरस्कार मिला। राखी का छोटा भाई आयुष सोचने लगा कि कोई स्थान या नाम समय के साथ कहाँ, कब और कैसे परिवर्तित हो जाता है?

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आपने कक्षा छह (अतीत से वर्तमान भाग–1) में हर्षवर्द्धन के शासनकाल तक पढ़ा था। अब हम इस कक्षा में हर्षवर्द्धन के शासनकाल के बाद के समय को समझने का प्रयास करेंगे। आप देखेंगे कि हर्ष के पहले के भारत और बाद के भारत में कौन–कौन से परिवर्तन आए। समय के साथ–साथ हमारे समाज में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन कभी शब्दों के अर्थ, कभी स्थानों के नाम, कभी भौगोलिक सीमाओं एवं जीवन शैली के सन्दर्भ में होते रहते हैं।

समय के साथ व्यक्तियों के खान–पान, वेश–भूषा, पहनावा, रीति रिवाज आदि में परिवर्तन होते रहते हैं। आप अपने ही देश के किसी दूसरे राज्य में जायेंगे तो वहाँ के खान–पान, पहनावा आदि में अंतर देखने को मिलेगा। जब आप को भी उनके साथ कुछ दिनों तक रहने का मौका मिलेगा तो सम्भव है कि आपकी जीवन शैली में भी

परिवर्तन दिखने लगे।

आगे की चर्चा में हम मोटे तौर पर 750 से 1750 ई॰ (आठवीं शताब्दी के मध्य से अठारहवीं शताब्दी के मध्य) तक लगभग एक हजार वर्ष में होने वाले परिवर्त्तनों को समझने का प्रयास करेंगे।

आज हम अपने देश के लिए 'हिन्दुस्तान' नाम का प्रयोग भारत और इण्डिया के पर्यायवाची के रूप में करते हैं। क्या आप जानते हैं कि यह नाम तेरहवीं शताब्दी में तुर्क सत्ता की स्थापना (तुर्कों की चर्चा विस्तृत रुप से इकाई तीन में की गई है) के बाद प्रचलित हुआ।

मानचित्र 1

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

मानचित्र 2

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

समय हिन्दुस्तान की भौगोलिक सीमा उन क्षेत्रों पर आधारित थी जो तुर्क सत्ता के अधीन थे। लगभग तीन शताब्दी बाद मुगल वंश के संस्थापक बाबर ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग वस्तुतः सम्पूर्ण उपमहाद्वीप के लिए किया। यद्यपि इस क्षेत्र में मुगल सत्ता का सर्वाधिक विस्तार 17वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में बाबर के वंशज औरंगजेब के समय में हुआ।

इसी प्रकार हमारा राज्य 'बिहार' के नाम से जाना जाता है इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग तेरहवीं शताब्दी के एक इतिहासकार मिन्हाज–ए–सिराज ने किया। बौद्ध

विहारों की इस भूमि को 'अर्ज–ए बिहार' का नाम दिया और मुगल काल (मुगल काल की चर्चा इकाई–4 में विस्तृत रूप से करेंगे) में अकबर ने इसे प्रान्त के रूप मे गठित किया।

मानचित्र 1 के आठ प्रमुख राज्यों की सूची बनाएँ।

मानचित्र 2 करीब 700 सालों के बाद (सतरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में) औरंगजेब के विशाल साम्राज्य दिखाता है। (इसके भी प्रमुख राज्यों की सूची बनाएँ)

मानव जीवन को बेहतर और उन्नत बनाने के लिए विज्ञान के सिद्धान्त पर आविष्कृत विभिन्न कल पूर्जों और मशीनों का व्यवहारिक प्रयोग (खेती, कल–कारखाने आदि) प्रौद्योगिकी कहलाता है।

दोनों मानचित्रों का अवलोकन करने पर आप क्या अन्तर पाते हैं, चर्चा करें।

मध्ययुगीन भारत का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर आधारित था। कृषि के साथ–साथ छोटे स्तर पर भी अन्य आर्थिक गतिविधियों के संकेत मिलते हैं। इनसे वाणिज्य व्यापार और शहरी–जीवन की रफ्तार धीरे–धीरे बढ़ने लगी। इसमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उत्पादन के क्षेत्र में आए तकनीकी परिवर्तनों के फलस्वरुप नगरों के विकास एवं उनकी संख्या मे वृद्धि हो रही थी। लोगों के रहन–सहन और विचारधारा में परिवर्तन के कारण भारत के साथ–साथ पूरी दुनिया की प्रौद्योगिकी में बदलाव हो रहे थे। आइये अब हम विभिन्न क्षेत्रों के प्रौद्योगिकी में हुए परिवर्त्तनों पर एक नजर डालें।

जैसा कि आप जानते हैं कि प्राचीन समय से ही खेती लोगों की आय का प्रमुख साधन रहा है। पहले खेतों की कोड़ाई के लिए कुदाल या फावड़ा का इस्तेमाल होता था। बाद में हल का इस्तेमाल होने लगा।

आज सिंचाई के लिए किन–किन साधनों का इस्तेमाल किया जाता है ? अपने शिक्षक से उनपर चर्चा करें।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

खेतों की सिंचाई हेतु जल प्राप्त करने के कई साधन थे। वर्षा के जल को भी तालाबों और कुण्डों में इकट्ठा कर सिंचाई की जाती थी। कुँओं से भी सिंचाई होती थी। कुँओं से पानी को बाहर निकालने के लिए कई तकनीक/यंत्र प्रचलित थे। पानी को बाहर निकालने के लिए अरघट्ट या घटी यंत्र का इस्तेमाल प्राचीन समय से ही होता था। बाद में रहट का इस्तेमाल होने लगा। रहट में जंजीर लगी होती है जो पानी को गहराई से निकाल पाना संभव बनाती है। बड़ी दाँतेदार पहिए इसे पशु–शक्ति के उपयोग और जंजीर की गति को ठीक तरह से नियन्त्रित करने में सक्षम बनाते हैं (चित्र–1) आज भी कई गाँवों में कहीं–कहीं सिंचाई के लिए रहट का प्रयोग आप आसानी से देख सकते हैं।

चित्र 1 – रहट

चित्र 2 – धुनिया

प्राचीन भारत में वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में धागों की कताई के लिए केवल हाथ से चलने वाले पहिए और तकली का प्रयोग होता था। बाद में 13वीं शताब्दी के आस–पास इस क्षेत्र में चरखे का प्रयोग होने लगा। धुनिया की कमान (धुनकी) भी संभवतः इसी समय भारत में आई। जहाँ

चित्र 3 – चरखा

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

तकली से सूत कातने में बहुत समय लगता था वहीं चरखे से सूत कातने की गति काफी बढ़ गई। जैसे–जैसे चरखे और धुनकी का प्रसार होता गया सूती कपड़े की गुणवत्ता एवं उत्पादन में वृद्धि हुई।

जैसा कि आपने कक्षा छह में पढ़ा था कि लेखन के क्षेत्र में हमारे देश के लोग ताड़ के पत्तों का अधिकतर प्रयोग करते थे। परन्तु मध्य युग में, तुर्कों के आगमन के साथ लेखन में कागज का व्यापक उपयोग होने लगा। सबसे पहले कागज 100 ई॰ के आस–पास चीन में बनाया गया था। अपने देश में कागज का प्रयोग 13वीं शताब्दी के आस–पास हुआ। इससे ज्ञान और शिक्षा के प्रसार में काफी वृद्धि हुई। व्यापारिक लेन–देन में भी काफी सुविधा हुई। उस काल की रचनाएँ आज भी पांडुलिपियों के रूप में सुरक्षित हैं।

तेरहवीं शताब्दी के आस–पास विज्ञान के क्षेत्र में समुद्री जहाजों पर चुंबकीय कुतुबनुमा (दिशासूचक यंत्र) का प्रयोग हुआ। इस नवीन आविष्कार का समुद्री व्यापार पर अच्छा प्रभाव पड़ा और समुद्र में यात्रा करने में सुविधा हुई। दूसरा प्रमुख आविष्कार था समय सूचक उपकरणों का प्रयोग। चौदहवीं शताब्दी में सुल्तान फिरोज शाह ने (इकाई–3 में इसके बारे में आप विस्तृत रूप में पढ़ेंगे) ने फिरोजाबाद (दिल्ली) में एक मीनार पर अनेक नक्षत्र घड़ियाँ, एक धूप घड़ी और एक जल घड़ी भी लगवाई थी जिससे समय की सही सूचना दी जाती थी।

युद्ध के क्षेत्र में घुड़सवार सैनिकों की सुविधा के लिए दो महत्वपूर्ण आविष्कार इसी समय हुए। पहला आविष्कार था लोहे की रकाब, जिससे सैनिकों को घोड़े पर जम कर बैठने में सुविधा प्राप्त हुई। इसके उपयोग से युद्ध क्षेत्र में आक्रमण का तरीका और अधिक कारगर हो गया। दूसरा आविष्कार था लोहे का नाल जो घोड़े के खुर में लगायी जाती थी। नाल लगाने के दो लाभ थे – पहला इससे नरम जमीन पर घोड़े के पैर को अच्छी पकड़ प्राप्त होती थी और दूसरा खुरदरे कठोर धरातल पर खुर सुरक्षित रहते थे। भारत में इन दोनों आविष्कारों का प्रचलन नवीं शताब्दी के बाद से हुआ जिसके फलस्वरूप युद्धनीति में काफी परिवर्तन हुये। परंतु इसका व्यापक प्रयोग तुर्कों क आगमन के बाद ही संभव हुआ।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

SOL www.absol.in

नयी प्रौद्योगिकी एवं विचारधारा लाने में भारत के बाहर से आए लोगों का भी बहुत बड़ा योगदान है। जैसा कि आप जानते हैं प्राचीन समय से ही इस उपमहाद्वीप के लोग व्यापार करने दूसरे देशों में जाते थे। ठीक इसी प्रकार इन देशों से भी लोग व्यापार करने भारत आते थे। ऐसे ही एक व्यापारियों का समूह अरब प्रायद्वीप से भारत के पश्चिमी तट से होकर भारत आया। धीरे–धीरे इनमें से कुछ व्यापारियों ने यहाँ रहना प्रारम्भ किया। अरब लोगों ने आठवीं शताब्दी में सिंध पर अपना शासन भी स्थापित कर लिया। इन्हीं अरबों के साथ भारत में एक नये धर्म 'इस्लाम' का आगमन हुआ। इस्लाम धर्म में लोग यह मानते हैं कि एक ही ईश्वर है–अल्लाह। हजरत मोहम्मद अल्लाह का पैगाम यानी संदेश लाने वाले पैगम्बर हैं। इस्लाम धर्म के अनुयायी मुसलमान कहलाते हैं। मुसलमान कुरानशरीफ को अपना धर्म ग्रंथ और पथ प्रदर्शक मानते हैं।

अरब लोग अपने साथ अपने यहाँ की रीति–रिवाज, पहनावा और पकवान लेकर भी आए। इनके प्रमुख पकवानों में पुलाआव, बिरयानी, कोरमा, फिरनी आदि प्रमुख हैं।, कालांतर में ऐसे ही नए प्रभाव तुर्क अफगान और मुगल भारत में ले कर आए।

- मध्यकाल के कौन–कौन से खाद्य पदार्थ हम आज भी खाते हैं?
- उस दौर में आम लोग क्या पहनते होंगे?

अरबों का प्रभाव भारत के सीमावर्ती एवं तटीय क्षेत्रों तक सीमित रहा। इस संपर्क से ज्ञान–विज्ञान और वैचारिक स्तर पर सीमित आदान–प्रदान हुआ। कालांतर में तुर्क, अफग़ान, ईरानी और मुग़लों ने इस देश में प्रवेश किया और भारत में स्थाई राज्यों की स्थापना की। इनके आने से सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में ज्यादा व्यापक और दुर्गामी प्रभाव पड़े। इनसे हमारी भाषा,

क्या कारण रहा होगा कि भारत अतीत से ही संसार के लोंगो के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा ?

© RSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

रहन–सहन, पोशाक, रीति–रिवाज आदि प्रभावित हुए और उनमें एक मिली–जुली परंपरा का विकास हुआ। इसे ही 'गंगा–जमुनी' संस्कृतिक कहते हैं। इसके बारे में विस्तृत रूप से आप आगे की इकाइयों में पढ़ेंगे।

क्या आपको अपने गाँव में 'गंगा–जमुनी' संस्कृति की झलक देखने को मिलती है ?

प्रसिद्ध विद्वान सैयद सुलेमान नदवी ने भारत में बस गए अरब के एक कवि अबू जिलअ सिंधि के एक अरबी गीत का उद्धरण दिया है, जिसमें वह भारत की दिल खोलकर प्रशंसा करता है।

> **"मेरे मित्रों ने नहीं माना और ऐसी अवस्था में यह बात ठीक नहीं थी, जबकि भारत की और युद्ध में भारत के तीर की प्रशंसा हो रही थी।"**
>
> **"अपने प्राणों की सौगंध, यह वह भूमि है जब इसमें पानी बरसता है तब उससे उन लोगों के लिए दूध, मोती और लाल उगते हैं, जो श्रृंगार से रहित है।**
>
> **"इसकी मुख्य चीजों में कस्तूरी, कपूर, अम्बर, अगर और अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थ उन लोगों के लिए हैं जो मैले हों।" "और भाँति–भाँति के इत्र, जायफल, सम्बुल, हाथी दाँत, सागौन की लकड़ी और चंदन है. और यहाँ के बब्बर शेर, चीते, हाथी तथा हाथी के बच्चे होते हैं।" "यहाँ के पक्षियों में कुलंग, तोते, मोर और कबूतर हैं। वृक्षों में यहाँ नारियल, आबनूस और काली मिर्च के पेड़ हैं।"**
>
> **"और हथियारों में तलवारें हैं, जिनको कभी सिकली की आवश्यकता नहीं होती, यहाँ ऐसे भाले हैं जब वे हिले तो उनसे सेना की सेना हिल जाए। "तो क्या मूर्ख के सिवा कोई और भी ऐसा है जो भारत के इन गुणों को अस्वीकार कर सकता है।"**

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

इस समय स्थानीय धर्म में भी काफी बदलाव आया। इस देश के बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं। हिन्दू धर्म माननेवाले लोग बहुत सारे देवी–देवताओं की पूजा

करते हैं। उन्हें कई तरीकों से पूजते हैं। कभी–कभी अग्निकुण्ड में होम (हवन) भी करते थे, जिसे यज्ञ कहा जाता था।

भक्ति संतों के वैसे दोहों पर चर्चा करें जिसे आपने हिन्दी की पुस्तक में पढ़ा है।

मध्ययुग में हिन्दू धर्म में भी कई बदलाव देखने को मिले। यूँ तो भारत में हर जगह हिन्दू धर्म मानने वाले लोग प्रायः शिव, विष्णु, राम और कृष्ण जैसे देवताओं को मानते हैं। लेकिन इस काल में तांत्रिक विचारधारा शैवमत की एक शाखा के रूप में उभरा इसमें कपाल (खोपड़ी) धारण करना तथा कपाल में ही भोजन ग्रहण करते थे।

हिन्दू–धर्म में देवी देवताओं के प्रति आस्था व्यक्त करने की अलग–अलग तरीके या पद्धतियाँ सम्प्रदाय कहलाती हैं।

जैसा कि आपको याद होगा कि गुप्त काल में वैष्णव सम्प्रदाय लगभग पूरे भारत में फैल चुका था। अपनी उदारवादी प्रवृत्ति तथा विष्णु के अवतार के रूप में लौकिक देवताओं की उपासना के कारण यह सम्प्रदाय अधिक लोकप्रिय हुआ। इसमें कृष्ण की रासलीला का बड़ा महत्व है।

गुप्त काल में मातृदेवी की उपासना पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो चुकी थी। पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, श्री काली आदि अनेक रूपों में शक्ति की उपासना प्रचलित थी। सातवीं शताब्दी से इस उपासना में तंत्र–मंत्र का विकास बड़े पैमाने पर हुआ। तांत्रिक मंत्र के अन्तर्गत ध्यान योग (पूजा) तथा चर्या (अनेक प्रकार के आचार) की व्यवस्था है।

इसके अतिरिक्त इस काल में समाज में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। राजाओं द्वारा बड़े–बड़े मंदिरों के निर्माण में रूचि बढ़ने लगी। दक्षिण भारत के चोल शासक अपने भव्य मंदिरों के निर्माण के लिए जाने जाते हैं। (इसके बारे में आप इकाई–2 में पढ़ेंगे)।

वैसी वस्तुओं की सूची बनाएँ, जिसे हवन में डाला जाता है।

इस युग में एक महत्वूपर्ण परिवर्तन भक्ति की अवधारणा के रूप में हुई। भारत में इस विचारधारा के कई सन्त हुए, जिनका नाम हमलोग आज भी सुनते हैं। कबीर, रैदास, नानक, रामानंद आदि प्रसिद्ध सन्त कवि थे। इनके

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दोहे आज भी आप आम आदमी द्वारा सुनते होंगे एवं हिन्दी की पुस्तकों में पढ़ते होंगे। इनलोगों ने इस बात को समझाने का प्रयास किया कि बिना किसी कर्मकाण्ड (बाह्य दिखावा) के प्रेम, भाईचारा एवं भक्ति के द्वारा भगवान के करीब पहुँचा जा सकता है। इन भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी संत कहलाए। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना, धन–दौलत व पद सब त्याग कर गरीबों और लाचारों की सेवा करना ही धर्म है। बिहार के प्रसिद्ध हिन्दी भक्त कवियों में दरिया साहब का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका जन्म शाहाबाद जिले के एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। पटना जिले के मनेर के प्रसिद्ध हजरत शरफुद्दीन अहमद प्रमुख सूफी संत थे (इनके बारे में विशेष रूप से आप इकाई सात में पढ़ेंगे।)

नये सामाजिक और राजनीतिक समूह का उदय :–

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE REPUBLISHED

अभी आपने देखा कि मध्य काल में जीवन के विविध क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ। इन परिवर्तनों ने लोगों के सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित किया। सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर कई समुदाय अस्तित्व में आए। इसी काल में राजपूतों ने भारतीय इतिहास में एक नई शक्ति के रूप में पदार्पण किया। राजपूत कौन थे और कहाँ से आये इसपर इतिहासकार एक मत नहीं हैं। राजपूत शब्द के अन्तर्गत केवल राजा और सामंत ही नहीं बल्कि सेनापति और सैनिक भी आते थे। एक अन्य समुदाय कवि और चारण का था जो राजाओं के पराक्रम, उनकी दयालुता और विजय गाथाओं का गुणगान करता था। इस काल में जन्म लेनेवाली अनेक जातियाँ सामाजिक क्षेत्र में अब भी सक्रिय हैं। राजाओं के दरबार में मुख्यतः लिखने पढ़ने का कार्य करनेवाली कायस्थ जाति भी इसी काल में प्रकाश में आई। इसके अलावे सिक्ख, जाट आदि समुदाय भी राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हुए।

इस समय बिहार में बहुत से जनजातीय समूहों का उदय हुआ जिसमें चेरों राजवंश प्रमुख था। चेरो ने शाहाबाद, सारण, चम्पारण, मुजफ्फरपुर एवं पलामू जिलों में शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। चेरो लगभग 300 वर्षों तक इस क्षेत्र में एक शक्तिशाली राजवंश के रूप में बने रहे। चैनपुर (शाहाबाद जिला) पर बाघमल नामक चेरो सरदार का कब्जा था जिसके दो

बेटे चाँद एवं मुण्ड इस क्षेत्र के चण्डेश्वरी एवं मुण्डेश्वरी नामक मन्दिरों की लोक–कथाओं से जुड़े हैं।

आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन :–

प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के फलस्वरूप खेती योग्य भूमि की तलाश हो रही थी। जंगल काटे जा रहे थे। जंगलों में रहनेवाले वनवासियों को जंगल छोड़ना पड़ रहा था। कुछ वनवासी जंगलों को खेती योग्य भूमि बनाने में जुट गए।वे किसान बन गए। धीरे–धीरे उनके जीवन में जटिलता आने लगी। किसानों का ये नया समूह क्षेत्रीय बाजार, मुखियाओं, पुजारियों, मठों और मन्दिरों से प्रभावित होने लगे। किसानों के बीच सामाजिक और आर्थिक अन्तर दिखाई पड़ने लगा। उनके बीच ऊँच–नीच की भावना पनपने लगी। वे जातियों एवं उपजातियों में विभाजित होने लगे। ये जातियाँ स्वयं अपना नियम बनाती थीं। इन नियमों का पालन बड़े बुजुर्गों की एक सभा करवाती थी, जिसे इलाकों में जाति पंचायत कहा जाता था।

ऐतिहासिक स्रोत (इतिहास को जानने के साधन):–

इतिहासकार अतीत की घटनाओं का अध्ययन करते हैं और इस काम में विभिन्न साधनों का उपयोग करते हैं। ऐसे सभी साधन स्रोत कहलाते हैं। पिछली कक्षा में भी आपने ऐतिहासिक स्रोतों के बारे में एक समझ विकसित की थी। इन स्रोतों में लिखित रचनाएँ अथवा पाण्डुलिपियाँ, अभिलेख, सिक्के, भग्नावशेष, चित्र, इत्यादि शामिल हैं। प्राचीन काल की तुलना में मध्यकाल में इन स्रोतों की संख्या में वृद्धि हुई और इनमें विविधता भी आई। किन्तु प्रधानता लिखित सामग्री की ही रही। जैसा कि आप जान चुके हैं कि तेरहवीं शताब्दी से भारत में कागज का प्रचलन व्यापक ढंग से होने लगा था। इस काल में लिखी गई पाण्डुलिपियाँ एवं प्रशासन संबंधी अन्य प्रपत्र अभिलेखागारों एवं पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं।

कुछ ऐतिहासिक स्रोतों का

अभिलेखागार–
ऐसा स्थान जहाँ दस्तावेजों और पाडुंलिपियो को संग्रहित किया जाता है। आज सभी राष्ट्रीय और राज्य सरकारों के अभिलेखागार होते हैं जहाँ वे अपने तमाम पुराने सरकारी अभिलेख और लेन–देन के ब्योरा का रिकार्ड रखते हैं।

© RSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

स्मरण करें जिसके बारे में आपने कक्षा छह में एक समझ विकसित की थी।

इस काल की अनेक घटनाओं की जानकारी हमें अभिलेखों से प्राप्त होती है। अभिलेख प्रायः पत्थरों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर लिखे गये थे। हमारे देश के बहुत सारे मन्दिरों–मस्जिद और गाँवों में अभिलेख आज भी हैं।

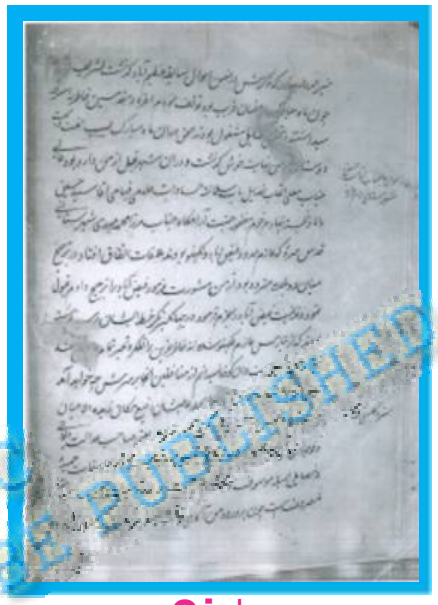

Qjeku

इस काल के स्रोतों में पाण्डुलिपियों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है जिससे तात्कालिक इतिहास को जानने में मदद मिलती है। पांडुलिपियाँ हस्तलिखित सामग्री हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि आरम्भ में ताड़पत्रों और भोजपत्रों पर यह लिखी जाती थी। बाद में कागज पर लिखी जाने लगी। धीरे–धीरे कागज सस्ता होता गया और बड़े पैमाने पर उपलब्ध होने लगा। इस युग में आप पाते हैं कि प्रामाणिक लिखित सामग्री की संख्या और विविधता आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गई। ये पाण्डुलिपियाँ अनेक भाषाओं में हैं जिनका हम आज इस्तेमाल करते हैं। फरमान राजा द्वारा निर्गत आदेश प्रत्र को कहते थे। अधिकतर ऐसे आदेश पत्र भूमि अनुदान से संबंधित थे। प्रस्तुत फरमान जो औरंगजेब के शासनकाल से संबंधित है शेख फैजुल्लाह नामक व्यक्ति को प्रदान किया गया था जिसमें स्पष्ट आदेश है कि उस क्षेत्र की समस्त कृषियोग्य व अन्य भूमि एवं उससे प्राप्त राजस्व और अन्य उत्पादों पर शेख फैजुल्लाह के कुल (वंश) का नियंत्रण होगा और उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके उत्तराधिकारियों का होगा।

vfHkys[k

© NCERT NOT TO BE PUBLISHED

इस फरमान से जागीरों को अनुवांशिक बनाने का महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त होता है।

उन दिनों छापखाने नहीं थे इसलिये लिपिक या नकलनवीस उन पाण्डुलिपियों की प्रतिकृति (नकल) तैयार करते थे। कालान्तर में प्रतिलिपियों की भी प्रतिलिपियाँ बनती गईं जो तुलनात्मक रूप से एक–दूसरे से काफी भिन्न होने लगीं।

आधुनिक पटना स्थित खुदाबख्श ओरियण्टल लाइब्रेरी मध्यकालीन भारतीय इतिहास को जानने एवं समझने के प्रमुख स्रोतों का केन्द्र है। इसमें अरबी तथा फारसी में लिखी ज्ञान–विज्ञान सम्बंधी ऐसी पुस्तकें हैं जिनसे मध्ययुगीन इतिहास और सस्कृति के बारे में मौलिक जानकारी प्राप्त होती है।

लघु चित्र का नमूना

उस समय की कई पुस्तकें सचित्र होती थीं। ये चित्र अक्सर किताब के पूरे पन्ने पर छोटे–छोटे चित्रों के रूप में सजे होते थे। इन लघु चित्रों को मिनियेचर कहते हैं। लघु चित्रों को मुगल दरबार एवं उत्तर और दक्षिणी भारत के राजपूत राजाओं के दरबार में महत्वपूर्ण स्थान मिला। इन चित्रों में अधिकतर शाही दरबार, शिकार और लड़ाई के मैदान का चित्रण होता था।

इस काल में अनेक साहित्यिक ग्रन्थों की रचना हुई। कल्हण की 'राजतरंगिनी' इस काल की पहली ऐतिहासिक रचना है जिसमें कश्मीर के इतिहास का वर्णन है। अलबेरूनो की पुस्तक तहकीक–ए–हिन्द (तारीख–उल–हिन्द) से उस समय के समाज, धर्म, रीति–रिवाज आदि पर विस्तृत एवं प्रमाणिक जानकारी मिलती है। मिन्हाज उस सिराज कृत तबकात–ए–नासिरी में मोहम्मद गोरी एंव गुलाम वंश के शासन पर विस्तृत चर्चा है। जियाउद्दीन बरनी की पुस्तक तारीख–ए–फिरोजशाही में तुगलक वंश के राजनीतिक घटनाओं शासन प्रबंध एंव सामाजिक स्थिति का वर्णन हैं। अबुल फजल के अकबरनामा में अकबर के शासनकाल का प्रशासन एंव राजनीतिक का चित्रण है। इसके अतिरिक्त और भी कई पुस्तकें इस काल की जानकारी के प्रमुख

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

स्रोत हैं।

ukek & नामा शब्द सामान्यतः उन ऐतिहासिक रचनाओं के शीर्षक में शामिल है जो मुगलकालीन दरबारी संरक्षण में लिखी गई। इस परम्परा का आरंभ अकबर के समय में अबुल फजल के अकबरनामा से होता है।

संस्मरण :– किसी व्यक्ति के जीवन की उन बातों का वर्णन है जो उसे याद रहती है। वह अपनी रूचि और घटना के महत्व के अनुसार उसे प्रस्तुत करता है।

भारत के सन्दर्भ में मुगल शासक बाबर ने अपनी आत्मकथा ''तुजुक–ए बाबरी'' तुर्की भाषा में लिखी, जिसका फारसी अनुवाद ''बाबरनामा'' कहलाता है। उसने अपने लड़कपन की घटनाओं लड़ाइयों यहाँ के महत्वपूर्ण शासक और उनके आपसी संबंध यहाँ के लोगों का रहन–सहन, जलवायु, भूगोल आदि के संबंध में सजीव चित्रण किया है। उसने अपने पिता उमर शेख मिर्जा का वर्णन कुछ इस प्रकार से किया है :– वे कद में छोटे थे उनकी दाढ़ी गोल और चेहरा मांसल था और वे मोटे थे। उनका चोगा इतना तंग रहता कि उसकी डोरियों को बांधने के लिए उन्हें अपना पेट अंदर पिचकाना पड़ता था। अगर वे पेट को ढीला छोड़ देते तो अक्सर चोगे के बंध टूट जाते। वे पहनावे और बोली दोनों दिलों में रूखे थे।

यात्रियों के वृतान्त भी इस काल के इतिहास के अध्ययन में सहायक हैं। इसमें सबसे प्रसिद्ध रचना अफ्रीकी यात्री इब्ने बतूता का वृतान्त है जिसे 'रेहला' कहा जाता है। इब्ने बतूता मराकश (मोरक्को) का निवासी था। विश्व यात्रा के दरम्यान वह मोहम्मद बिन तुगलक (मो0 बिन तुगलक के बारे में विस्तृत रुप से आप इकाई–3 में पढ़ेंगे) के शासनकाल में हिन्दुस्तान

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आया और लगभग चौदाह वर्षों तक रहा। इस अवधि के दरम्यान उसने यहाँ के सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यापक प्रकाश डाला है।

fIDdk ds vè;;u dk U;es lefVDI dgrs gSA

सिक्कों के माध्यम से भी शासकों के तिथिक्रम को समझने में सहायता मिलती है। ये सिक्के सोना, चांदी, तांबा आदि के बने होते थे। इन सिक्कों से शासकों के राज्यारोहण साम्राज्य विस्तार, पड़ोसी शासकों के साथ संबंध एवं उनके आर्थिक समृद्धि के बारे में पता चलता है। तुगलक शासकों विशेषकर मुहम्मद बिन तुगलक के सिक्के बड़ी संख्या में मिले हैं। अपने राज्य में सासाराम के शासक शेरशाह सूरी ने चांदी के सिक्के चलाये। इसे आप आज भी संग्रहालयों में जाकर देख सकते हैं।

इस काल के शासकों के शासन काल में निर्मित अनेक भव्य मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों एवं किलों से इस काल के धार्मिक जीवन तथा आर्थिक समृद्धि और वास्तुकला की जानकारी मिलती है। इनमें से कई इमारतों जैसे दिल्ली का लाल किला, आगरे का ताजमहल, खजुराहो के मन्दिर को आप आज भी देख सकते हैं।

इस काल में बिहार की वास्तुकला का इतिहास भी स्मरणीय है। शेरशाह का सासाराम (रोहतास जिला) स्थित मकबरा हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य के सम्मिश्रण का एक सुन्दर नमूना है। मनेर में मख्दुम शाह दौलत का समाधि भवन भी एक उच्च कोटी के कला का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मध्यकाल में बिहार में निर्मित मन्दिरों में पटना से अठारह मील की दूरी पर स्थित वैकटपुर का शिव–मंदिर जिसके लिए राजा मानसिंह ने आर्थिक सहायता प्रदान की थी प्रसिद्ध है। रोहतास गढ़ में निर्मित हरिश्चन्द्र मंदिर के निर्माण का यश भी राजा मानसिंह को ही प्राप्त है।

इतिहासकार की भूमिका

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED
BSTBPC

जरा सोचिये इतिहास लेखन में इतिहासकार इन स्रोतों की मदद कैसे लेते हैं। इतिहासकार इन स्रोतों की मदद से बिना किसी भेदभाव के एक क्रमिक एवं सर्वमान्य समझ बनाने की कोशिश करते हैं। बीते हुए समय के बारे में कभी–कभी इतिहासकार को विचित्र परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। खासकर जब किसी एक ही व्यक्ति या घटना के सन्दर्भ में अलग–अलग मत रहते हैं।

आइए इसे एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करें। सन् 1328 ई॰ में दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद तुगलक ने एक आदेश जारी किया। उसने दिल्ली के निवासियों को आदेश दिया कि वे दिल्ली से दूर दक्षिण में दौलताबाद जाकर बसे। उस समय के दो इतिहासकारों ज़ियाउद्दीन बरनी और एसामी ने सुल्तान के राजधानी परिवर्तन की घटना को अपनी–अपनी किताबों में लिखा।

ज़ियाउद्दीन बरनी

ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख–ए–फिरूज़शाही' में लिखा–

''एक योजना सुल्तान के दिल में आयी कि दौलताबाद को राजधानी बनाया जाए। यह इसलिये क्योंकि दौलताबाद उसके साम्राज्य के मध्य में है। देहली, गुजरात, लखनौती, तिलंग, मावर, द्वारसमुद्र तथा कम्पिला, इस शहर से लगभग समान दूरी पर स्थित है। इस विषय में उसने किसी से परामर्श नहीं किया। उसने आदेश दिया कि उसकी अपनी माँ और राज्य के सारे बड़े अधिकारी व सेनापति अपने सहायक और विश्वासपात्रों के साथ दौलताबाद की ओर चलें। दरबार के हाथी–घोड़े, खजाना तथा बहुमूल्य वस्तुएं दौलताबाद भेज दी जायें। इसके पश्चात सूफी संत व आलिमों (इस्लामी ग्रंथों के अध्ययन करने वाले) तथा देहली के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध लोग दौलताबाद बुलाये गये। जो लोग दौलताबाद गये उन्हें सुल्तान ने खूब सारा धन इनाम में दिया। एक साल बाद सुल्तान देहली लौटा। उसने आदेश दिया कि देहली तथा आस–पास के कस्बों के निवासियों को काफिलों में दौलताबाद भेजा जाए। देहली वालों के घर उनसे मोल लिये जायें इन घरों की कीमत खजाने से दौलताबाद जाने वालों को दे दी जाए। ताकि वे वहां जाकर अपने लिए घर बनवा लें। शाही आदेशानुसार देहली तथा आसपास के निवासी दौलताबाद की ओर भेज दिये गये।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

देहली शहर इस प्रकार खाली हो गया। कुछ दिनों तक दिल्ली के सारे दरवाजे बन्द रहे, शहर में कुत्ते–बिल्ली तक न रह पाये। देहली के निवासी जो वर्षों से वहाँ रहते चले आ रहे थे, लम्बी यात्रा के कष्ट से रास्ते में ही मर गये। बहुत से लोग जो कि दौलताबाद पहुँचे अपनी मातृभूमि से बिछड़ने का दुःख सहन नहीं कर सके। वे वापस होने की इच्छा में ही मर गये। यद्यपि सुल्तान ने देहली से जाने वाली प्रजा को अत्यधिक इनाम दिये, वह परदेस के कष्टों को सहन न कर सकी।

इसके बाद दूसरे प्रदेशों से आलिमों, सूफियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लाकर देहली में बसाया। मगर इस प्रकार लोगों के लाने से देहली आबाद न हो सकी।

''लगभग पाँच–छः साल बाद सुल्तान ने आदेश दिया कि जो भी दिल्ली लौटना चाहता है वह लौट सकता है। कुछ लोग लौट गए मगर बहुत से परिवार दौलताबाद में ही बस गये।'

एसामी :

एसामी ने अपनी किताब ''फुतूह उस सलातिन'' में लिखा–''सुल्तान को देहली वालों पर संदेह था और वह उनके लिए मन में विष छिपाये रहता था। उसने गुप्त रूप से एक कुत्सित योजना बनाई कि एक महीने में देहली का विनाश कर दिया जाये। उसने सूचना कराई कि –जो कोई सुल्तान का हितैषी हो वह दौलताबाद की ओर प्रस्थान करें। जो कोई इस आज्ञा का पालन करेगा उसे अत्यधिक संपत्ति मिलेगी जो कोई इसका पालन न करेगा इसका सिर काट डाला जाएगा।''

उसने आदेश दिया कि देहली में आग लगा दी जाए और सभी लोगों को नगर से बाहर निकाल दिया जाए। परदेवाली स्त्रियों तथा एकांतवासी सूफियों को उनके घरों से बाल पकड़कर निकाला गया। इस प्रकार वे लोग देहली से निकले।

मेरे दादा भी उसी शहर में रहते थे। उनकी उम्र 90 वर्ष थी और वे एकांतवासी संत थे। वे कभी अपने घर से नहीं निकलते थे। वे पहले पड़ाव में ही मर गये। उन्हें वहीं दफन कर दिया गया।

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

सभी बूढ़े, युवक, स्त्री तथा बालक यात्रा करने के लिए विवश थे। बहुत से बालक दुध के बिना मर गये। अनेक लोगों ने प्यास के कारण प्राण त्याग दिये। उस काफिले में से अत्यधिक कठिनाई सहन करके केवल दसवां भाग ही दौलताबाद पहुँच सका। सुल्तान ने इस तरह एक बसा हुआ शहर नष्ट कर डाला।

जब देहली में कोई न रह गया तो सारे द्वार बन्द कर दिये गये। सुना जाता है कि कुछ समय बाद अत्याचारी बादशाह ने आस–पास के गांवों के लोगों को बुलाकर देहली को बसवाया। तोतों और बुलबुलों को बाग से निकालकर कौओं को बसा दिया।

न जाने सुल्तान को किस प्रकार उन निर्दोष लोगों पर संदेह उत्पन्न हो गया कि उसने उनके पूर्वजों की नींव उखाड़ डाली और आज तक उनकी सन्तानों के विनाश में तल्लीन है।''

आपके ध्यान में यह बात आ गई होगी कि मुहम्मद तुगलक की योजना के बारे में कुछ बातें ऐसी हैं जिसपर बरनी और एसामी दोनों इतिहासकार एकमत रखते हैं। जैसे सुल्तान ने लोगों को देहली से दौलताबाद जाने का आदेश दिया।

पर देहली से दौलताबाद जाने की घटना के बारे में बरनी कई ऐसी बातें लिखता है जो एसामी नहीं लिखता। जैसे बरनी लिखता है कि सुल्तान अपने राज्य की राजधानी बीचों–बीच बनाना चाहता था इसलिए उसने लोगों को दौलताबाद भेजा।

पर एसामी के अनुसार सुल्तान के मन में ऐसा विचार नहीं था। एसामी के अनुसार सुल्तान लोगों को कष्ट देना चाहता था। इसलिए उसने देहली खाली करवाई।

यह हमारे लिए परेशानी की बात है। अब हम यह कैसे जानें कि सुल्तान के मन में वास्तव में क्या विचार था ? इस विषय में हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते हैं। ऐसी कठिनाई बहुत बार हमारे सामने आती है। जो बातें दोनों लिखते हैं उनके बारे में तो हम सोच सकते हैं कि वे जरूर हुई होंगी। पर जो बातें एक ही व्यक्ति कह रहा है उनके बारे में हम झट से यकीन के साथ नहीं कह सकते कि वे जरूर हुई होगी।

बीते हुए समय के बारे में जब इतिहासकार आज लिखते हैं तो वे अक्सर इस

© DSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

कठिनाई से जूझते हैं। बीते समय के बारे में कुछ बातें तो पक्की तरह से कहीं जा सकती हैं, पर बहुत सी बातों के बारे में पक्की तरह से नहीं कहा जा सकता। ऐसी परिस्थिती में इतिहासकार अन्य स्रोतों को ढूँढ़ते हैं।

समय के साथ इतिहास को समझना :

इतिहासकार इतिहास (अतीत) को समझने के लिए इसे समान विशेषता रखनेवाले कुछ बड़े–बड़े हिस्सों–युगों या कालों में बाँट देते हैं। पिछले कक्षा में जो आपने इतिहास पढ़ा था उसमें प्राचीन समाज के कई प्रकारों का समावेश था। इस कक्षा में जो इतिहास आप पढ़ेंगे उसे प्रायः मध्यकालीन इतिहास कहा जाता है। हमने ईसा की आठवीं शताब्दी को मध्यकाल का आरंभ तथा अठारहवीं शताब्दी को उसका अन्त मान लिया है। ऐसा क्यों? जब आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे तब देखेंगे कि आठवी शताब्दी के आस–पास भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में काफी परिवर्तन हो रहे थे। सामाजिक नियम, धर्म, भाषा, कला इत्यादि जीवन के सभी क्षेत्रों को इन परिवर्तनों ने प्रभावित किया। इस प्रकार हम देखते है कि आठवीं शताब्दी के आस–पास भारत के इतिहास में एक नया युग आरंभ हुआ।

नए विचारों से समाज के सभी व्यक्ति एक साथ प्रभावित नहीं होते। यद्यपी भारत के इतिहास में कुछ परिवर्तन आठवीं शताब्दी से पहले ही आरंभ हो गए थे पर देश के कुछ भागों में उनका प्रभाव कुछ समय बाद ही अनुभव किया गया। इसलिए सामान्य दृष्टि से देखते हुए हम कह सकते हैं कि नये विचारों की शुरुआत आठवीं शताब्दी से हुयी और अठारहवीं शताब्दी आते–आते फिर अनेक परिवर्तन दिखने लगे। इसी कारण हम मध्यकाल का अंत और आधुनिक युग का आगमन लगभग अठारहवीं शताब्दी को मानते हैं। इन हजार वर्षों के दौरान इस उपमहाद्वीप के समाजों में प्रायः नए–नए परिवर्तन होते रहे। इस पुस्तक में जो आप पढ़ रहे हैं उसकी तुलना पिछली कक्षा में पढ़ी गई बातों से करने की कोशिश करें।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आइए फिर से याद करें :

(1) रिक्त स्थानों को भरें :–

(क) सोलहवीं सदी के आरम्भ में ..... ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया।

(ख) ..... एक विशेष प्रकार का फारसी इतिहास है।

(ग) ..... लोगों द्वारा भारत में एक नये धर्म का आगमन हुआ।

(घ) भारत में कागज का प्रयोग ..... शताब्दी के आस–पास हुआ।

(2) जोड़े बनाइए :–

राजतरंगिनी	दरिया साहब
भक्ति संत	सासाराम
तबकात– ए– नासिरी	वैकटपुर का शिव मंदिर
शेरशाह का मकबरा	कश्मीर का इतिहास
मानसिंह	मिनहाज–उस–सिराज

(3) मध्य काल के वैसे वस्त्रों की सूचि बनाइए जिसका व्यवहार हम आज भी करते हैं।

(4) वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में हुए दो प्रमुख प्राधैगिकिय परिवर्तनों को बताएँ।

(5) कागज का आविष्कार सर्वप्रथम कहाँ हुआ था।

आइए समझें :–

(6) वनवासियों को जंगल क्यों छोड़ना पड़ा?

(7) गंगा यमुनी संस्कृति से क्या समझते हैं?

(8) आठवीं शताब्दी के आस–पास हुए परिवर्तनों को लिखें?

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आइए विचार करें :–

(9) क्या प्राचीन काल की तुलना में मध्य काल के अध्ययन के लिए ज्यादा स्रोत उपलब्ध है?

(10) जब एक ही व्यक्ति या घटना के संबंध में अलग–अलग मत आते हैं :– ऐसी परिस्थितियों में इतिहासकार क्या करते होंगे?

vkb, djd n[k %&

(11) आप भी संस्मरण लिख सकते हैं। आप अपनी पसंद और रूचि के अनुसार किसी परिचित व्यक्ति या अपने जीवन की घटना को लिखिए।

(12) आजकल के प्रचलित सिक्कों से किन–किन बातों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है ?

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED